द्वादश तरंग

श्री ग्रन्थ निरंजनबोध

Date

ज्ञानी वचन चौ०

निर्गुण राजा निरंजन काल । त्रिलोक जिससे रहे बेहाल ।
सात द्वीप पृथ्वी नौ खण्ड । सप्त पाताल इक्कीस ब्रह्माण्ड ।

सहज सुन्न में उसका ठिकाना । काल को नाथ सबने माना ।
ब्रह्मा विष्णु और शिव देवा । सब करते काल की सेवा ।

चित्रगुप्त धर्म बलवीर । लिखते जग की ये तकदीर ।
चौरासी लाख और चारों खाने । लेख इसके सभी ने जाने ।

पशु पक्षी जल थल सारा । बन पर्वत जल जीव बेचारा ।
काल निरंजन सब पर छाया । पुरुष नाम का चिन्ह मिटाया ।
सत्तर युग यूं बीत जाते । पुरुष शब्द वास मन में पाते ।

पुरुष वचन

तब पुरुष ज्ञानी को बुलाते । धर्मराज प्रबल अति बनते जाते ।
यह अंश तो हुआ बलवान । जीव जगत के करता पान ।
प्रथम इसका जाके मिटाओ । जीव जगत के इससे छुड़ाओ ।

ज्ञानी वचन - साखी

दोहा :- कर प्रणाम ज्ञानी चले, करने हंस के काज ॥
जो काल हरा ना सके, तुम्हीं पुरुष को लाज ॥

चौपाई

मान सरोवर ज्ञानी आते । काल देख उन्हें क्रोध दिखाते ।
काल देख गर्जा अति महान । मस्तिष्क उसका साठ युत बलवान ।

सत्तर योजन उसके दंत । करे प्रलय जो काटे अनंत ।
कान एक नयन चौरासी । मुख आठ हाथों में फांसी ।

जाने जाते उसके छत्तीस नाम । बोले वचन कर अभिमान ।
तीन दंत हैं उसके अति विशाल । जिससे होते तीन लोक बेहाल ।

निरंजन बोध

Date _____

एक दंत पाताल में जाता । जाकर वहाँ बासुकि को खाता ।
दूजा दंत पृथ्वी पर आता । देव ऋषि जग दानव खाता ।

तीजा दंत गया आकाश । चन्दा सूरज खाये कैलाश ।
खाये ब्रह्मा वेद जब पढ़ते । खाये शिव जब ध्यान वो करते ।

विष्णु को वह दौड़ के खाया । खोके सबको धूल बनाया ।
गेरे दन्त आग सम भाई । तीन लोक खाये काल अन्याई ।

ज्ञानी वचन

ज्ञानी देखे दृष्टि पसार । काल से बचे नहीं संसार ।
ज्ञानी काल को डाँट लगाता । काल तू दुनियां को सताता ।

निरंजन वचन साखी

दोहा :- जाओ ज्ञानी लेके, मानों वचन प्रकाश ॥
तीन लोक पुरुष हमें दिये, धरती पाताल आकाश ॥

ज्ञानी वचन चौ०

ज्ञानी ने तब उसे बताया । पुरुष आज्ञा से जग में आया ।

साखी

दोहा मैं भेजा पुरुष ने, करने हंस के काज ॥
काल के विनाश को, दिये हमें सारे साज ॥

चौपाई

मारे काल शब्द बलजोड़ । दाँत तेरे हम देंगे तोड़ ।

निरंजन वचन

तब निरंजन बोले बानी । कैसे हंस छुड़ाओ ज्ञानी ।
जाये सारा मेरा निवास । पशु पक्षी जल थल में वास ।

तीन सौ साठ जाल बनाये । उसमें जीव सकल उलझाये ।

निरंजन बोध

Date

जिस दिन से मैंने जाल बनाया । उसे कोई सुलझा नहीं पाया ।
उसपर काम क्रोध हम डारें । तृष्णा सकल जीव को मारे ।

इसमें जीव सब बंधते जायें । कैसे तुम उन्हें पार लगायें ।
फिर काम एक हम ऐसा करते । पाप पुण्य की रचना रचते ।
शुभ और अशुभ दो दल साजा । ऐसे अलख निरंजन राजा ।

रानी वचन

सत्य शब्द की मेरी वाणी । जिससे छुड़ाऊँ सारे प्राणी ।
पाकर शब्द जो ध्यान लगायें । काल भगाके जीव छुड़ायें ।

काल वचन

काल तब उनसे बोले बानी । सब जीव वश हमारे रानी ।
तीन सौ साठ जाल बिछाये । कैसे हंस तुम मुक्ताए ।

गंगा जमुना पूजती सारी । पुष्कर गोदावरी नदी हमारी ।
बद्री केदार से हमारे धाम । जहाँ तहाँ बनाये तीर्थ महान ।

मथुरा नगर एक उत्तम धाम । जगन्नाथ का सब करते ध्यान ।
सेतुबन्ध भी है हमारा धाम । पुष्कर आये यम बलवान ।

दिंगलाज जीव जो भी जाते । कालका नगर कोट भी आते ।
गढ़ गिरना दत्त का धाम । जिसमें बैठा यम निदान ।

नगर अयोध्या राम हैं राजा । समुद्र पे पुल इन्होंने साजा ।
इन्हीं जाल हम जीव फंसाते । किस विधि तुम उन्हें मुक्ताते ।

रानी वचन

तब रानी वचन उसे सुनाये । यम से जीव छुड़ाने आये ।
सबको सुनाऊँ पुरुष का नाम । जिससे भागे यम बलवान ।
घाट बाट जो जाल बिछाये । हम शब्द से उन्हें मिटाये ।
सुन रे काल तुझे बतायें । शब्द संग हंसा लोक सिधाये ।

निरंजन बोध

Date _____

निरंजन वचन

कौन शब्द ज्ञानी तेरे पास । छुट्य नहीं सके यम की त्रास ।
पाँच पच्चीस तीन गुण बनाये । जिनसे सकल शरीर रचाये ।

उसमें पाप पुण्य का वास । मन बसी यम की त्रास ।
जहाँ तहाँ सब जग भरमाया । ज्ञान जगत हमने मिटाया ।
एक शब्द से कुछ होना पाये । चौरासी फाँसी हमने बनाये ।

ज्ञानी वचन

बोले ज्ञानी शब्द विचार । छूटे चौरासी की तार ।
पाँच पच्चीस गुण तीन मिटाये । ऐसा शब्द पुरुष हमें बताये ।

निरंजन वचन

बड़ा ज्ञानी तुम क्या करते । हमसे जीव छुड़ा नहीं सकते ।
कितने युग हम यहाँ बिताये । ज्ञानी हंस एक ना पाये ।

क्या तुम करो क्या शब्द तुम्हारा । तीन लोक संकट हमने डारा ।
~~साधु रीत मालुम~~
सन्त रीत मालुम हमको । प्रलय कर हम जीत सबको ।
कर्म रेखा बाँधे जीव बेचारे । सुर नर मुनि जीव जग के सारे ।

ज्ञानी वचन

ज्ञानी वचन काल से कहता । शब्द बिन नाश तू सबका करता ।
अब तू हमसे बच नहीं पाये । पुरुष सतशब्द हमें बताये ।

शब्द से जीव पार लगाऊँ । प्रभाव तेरा पल में मिटाऊँ ।
पाँच पच्चीस गुण तीन तुम्हारे । मियेयें हम शब्द से सारे ।

पाँच विकार की मैटूँ आरा । पुरुष शब्द पर कर विश्वास ।
शुभ अशुभ सभी नशाये । काल जाल हम तेरा मिटाये ।

निरंजन बोध

Date _____

निरंजन वचन

~~काल वचन ज्ञानी से कहता । सकल जग जाल मेरे फँसता~~
काल वचन ज्ञानी से कहता । जाल में जग मेरे फँसता ।
कैसे शब्द तुम इन्हें सुनाओ । किस विधि पार इन्हे लगाओ ।

फँसे जीव कर्म की करनी । कैसे बने पुरुष की शरनी ।
जग में पापी जीव अपार । कैसे पहुँचे पुरुष के द्वार ।

लोभी बनते सर्प विकरार । कैसे पायें मोक्ष का द्वार ।
विषयी जीव जगत के सारे । आते सब यम के द्वारे ।

ज्ञानी कहे सुन बलवान । हमसे पाये जीव (हंस) निर्वाण ।
जो ज्ञान हम इन्हें सुनाये । काम क्रोध से मुक्त बनाये ।

तृष्णा लोभ सभी मियायें । विषय जन्म सब दूर भगायें ।
करके जीव शब्द का ध्यान । मियें अपने क्रोध और काम ।

हंस पाये बलोक करके ध्यान । काल क्यूँ करे अभिमान ।
मोह माया हंस पड़ना पाये । जिससे हंस लोक सिधाये ।

निरंजन वचन

कहे निरंजन सुन हे ज्ञानी । सत्य है बखान तुम्हारी वाणी ।
तुम्हारी महिमा सबको सुनाऊँ । तुम्हारा जग में पंथ चलाऊँ ।
तुम तो एक पंथनाम बताते । हम दस पंथ से जीव फँसाते ।
जग के जीव मैं भरमाता । ज्ञानी को कर्मजाल फँसाता ।
मार कर जीवों को हम खाते । काम क्रोध से उन्हे फँसाते ।
कर्म विषय हम सभी बनाये । सब जीवों को उनसे फँसाये ।
ज्ञान हमारा जो भी समझता । काल मुख में वो ही पड़ता ।
अज्ञानी की हम करते हँसी । उस जीव पर चलती फाँसी ।
चौरासी में सब पड़ते सारे । वो सब जीव शरण हमारे ।
कैसे पहुँचे पुरुष के धाम । हमको भी बताओ साहिब ज्ञान ।

ज्ञानी वचन

Date

कहे ज्ञानी सुन काल बेचारी। यमलोक ना पहुंचे हंस हमारे ।
दिनरात जो पुरुष को ध्याता । शब्द को अपने हृदय बसाता ।
हंस हमारा शब्द को जपता । पुरुष प्रताप का सिमरण करता ।
नाम जपे और ध्यान लगाये । कर्म जगत के ना उन्हे सताये ।
शब्द मानते शब्द स्वरूप । निश्चित बनते हंस अनूप ।
नाम भक्ति को करते आस । सदा नाम पर करे विश्वास ।

निरंजन वचन

ज्ञानी उत्तम बहुत तेरा ज्ञान । हमने पढ़े बहुत वेद पुराण ।
इनको पढ़ता सब संसार । कलियुग गंगा मुक्ति द्वार ।
देके दान जीव उतरते पार । ऐसे सुमृत कहे विचार ।
यही विधि सब जीव भुलाये । जन्म मरण के बंध बन्धाये ।
सूतक पातक वेद विचार । पढ़के वेद सब करे सम्हार ।
एकादशी को मुक्ति पाते । योग यज्ञ सब लोग करोते ।

ज्ञानी वचन

सुनो काल ज्ञान की सन्धी । छोड़ो सब जीवों की फंदी ।
जब वीरा नाम हंसा पाते । जोग व्रत तपसभी मिटाते ।
वेद पुराण की ना करते आशा । शब्द पर करते हंस विश्वास ।
उनके निकट काल नही आये । सतनाम से जो ध्यान लगाये ।
बीरा पाके कष्ट सारे मिटते । शब्द को हंसा जब परखते ।
जोग व्रत व्यर्थ है सारा । अद्भुत नाम सदा रखवारा ।
हंस जो शरण हमारी आते । भक्ति भाव से लोक सिधाते ।

निरंजन वचन

भली बात ज्ञानी हमें सुनाये । उलझन मेरी मिट नही पाये ।
जीव भक्ति जो करे महान । उसको बताते तुम अपना नाम ।
पाकर शब्द जो बने गुमानी । कैसे पहुंचे लोक वो कैसे प्राणी ।
जीव जो नही शब्द विचारे । कैसे पहुंचे लोक तुम्हारे ।
शब्द पाके जो कर्म में पड़ता । कैसे जीव लोक पहुंचता ।
शब्द पाके ना उसको जपता । जीव वो कैसे भवसागर तरता ।

Date

ज्ञानी वचन

तब ज्ञानी ने उसे बताया । ज्ञान सन्धि का मर्म सुनाया ।
हंस जो भक्ति मेरी करता । सदा शब्द को हृदय रखता ।
काम क्रोध गर्व ये सारे । इनको त्यागे हंस हमारे ।
शब्द हमारा यम से छुड़ाये । हंस तब सतलोक सिधाये ।
वीरा नाम पुरुष का प्यारा । निर्मल हंस होय उजियारा ।
आवागमन सब हंस मिटाते । कालफन्द त्याग लोक सिधाते ।
काल तुमसे हंस हाथ छुड़ायें । तब शरण पुरुष की पायें ।

निरंजन वचन

अभिमानी वचन काल सुनाये । मेरे बन्धन ~~मुझ~~ कौन छुड़ाये ।
कर्म जंजीर बँधा संसार । जग में मेरा ही है विस्तार ।
or कर्म जाल फँसा जग ये सारा । जग में फैला नाम हमारा ।
त्रिदेवों को भी मैंने बनाया । आवागमन उन्हें भी फँसाया ।
जन्म मरण सब जीव भुलाये । देव ~~ऋ~~ऋषि सब जाल फँसाये ।
सिद्ध साधु और महा ज्ञानी । वश में मेरे सारे प्राणी ।
कर्म रेखा से कोई बच नहीं पाये । त्रिदेव सुर असुर सभी फँसाये ।

ज्ञानी वचन

कहे ज्ञानी सुन काल बेचारे । तोहू में सब जाल तुम्हारे ।
हंसो की हम शीघ्र उबारे । पुरुष शब्द है साथ हमारे ।
पुरुष आज्ञा से तुम्हें मिटाये । जीव जगत के तुम खाये ।
हंसो को हम पार लगाये । युग युग हम भवसागर आये ।
हंस पुरुष के होते अंश । ~~जन्म~~ जग में आकर कहाये ~~वंश~~ वंश ।
शरण उनके हंस जो आते । कोटि कर्म वो अपने मिटाते ।
हंस जो सतनाम को पाते । अन्त समय वो कष्ट ना पाते ।

निरंजन वचन

मैंने ज्ञानी वचन तुम्हारे । हंस ले जाओ पुरुष के द्वारे ।
~~चौदह काल जग में हमारे । बार बार रहते रखवारे ।~~

निरंजन वचन

मानूँ रानी वचन तुम्हारे । हंस ले जाँत पुरुष के द्वारे ।
जग में चौदह काल हमारे । घाट बाट के वो रखवारे ।
सुर नर मुनि घाट पर आते । आशा जो मुक्ति की लगाते ।
दुर्गा रानी बड़ी बलधारी । वही सबको पार उतारी ।
नदी घाट ~~अनही~~ भोजन मिलता । ~~सब~~ हर कोई मुक्ति आशा करता ।

रानी वचन

कहे रानी सुन काल सुनाऊँ । अपने हंस की बात बताऊँ ।
सत शब्द जीव का है हथियार । हंस चले आगे दूत कोमार ।
कोटि सिद्ध तेज ~~ब~~ रखते हंस । जब परवाना देते वंश ।
वंश छाप जब पाते प्राणी । नहीं रोकती उनको दुर्गा रानी ।
काल तुम जब करो विचार । हंस हमारे उतरते पार ।
सारशब्द हंस हमारे पोते । काल शीश चढ़ लोक सिधाते ।

निरंजन वचन

हे रानी क्या तुम्हें बताऊँ । गुणगान काल का तुम्हें सुनाऊँ ।
पाँव पाताल शीश अकाश । सौलह योजन तेज प्रकाश ।
गर्जे काल महा विकराल । सत्रह लाख पाँव पसारे काल ।
लपके जीभ ज्यों चमके तारा । ज्यों चमके बिजली अंधियारा ।
मुख बढ़ाके के दाँत बढ़ाये । रानी को घेर फँसाये ।
हमी पुरुष हम बलवान । तुम कैसे बिगाड़ो मेरे काम ।

रानी वचन

रानी चिल्लाये अति घनघोर । मुख पकड़ दाँत दिये सब तोड़ ।
पुरुष शब्द से काल मिटाया । तोड़के मुख समुद्र डुबोया ।
पुरुष ~~तब~~ रूप तब अपना बनाया । ज्यों रूप काल ने रचाया ।

निरंजन वचन

काल जोड़ता तब अपने हाथ । आया शरण में आपकी नाथ ।
बल बुद्धि सब तुमसे पाये । अब तुम पार हमें कराये ।
बालक बहुत गलती करते । मात पिता नहीं मन उनको रखते ।

Date

तुम्हीं पुरुष दिये हमको राज । फिर दिये हमको सारे साज ।
जिससे हमने गाँव बसाया । शून्य स्थान एक बनाया ।
अब जाकर मैं वहीं रहूँगा । बिन आज्ञा कुछ नहीं करूँगा ।
पहचान आपकी हम नहीं कीन्हे । सत्त पुरुष दर्श हमको दीन्हे ।
हाथ जोड़ चरण ध्यान लगाया । धन्य भाग्य दर्शन मैंने पाया ।
साहिब भेद अब मुझे बताये । पाऊँ चिन्ह हंस मुक्ताये ।

ज्ञानी वचन

सुन रे काल निरंजन राई । पुरुष नाम है वीरा भाई ।
जो हंस चित भक्ति रखते । मत ग्रहण सब उसका करते ।

साखी :- शरण आते जीव जो, पाके निज वीरनाम ।
मानते मत उसका सभी, सुन काल बलवान ।

निरंजन वचन

साहिब सुनिये मेरी बात । शब्द बसाऊँ हृदय नाथ ।
ज्ञान कथन मन में बसता । आवागमन की आशा रखता ।

ज्ञानी वचन

सुन वचन ए काल हमारा । नहीं सत्य वह जीव तुम्हारा ।

साखी :- जिस घर से जीव आये है, सुध गई वो खोय ॥
शब्द कहूँ उस जीव से, जो शब्द पारखी होय ॥

निरंजन वचन

कहे बात तुम भली विचार । हंस जायें आपके भव से पार ।
निकट दूत नहीं उनके आये । साहिब हंस लोक सिधायें ।

साखी :- साहिब सबका एक है, साहिब का कोई एक ।
लाखों में भी हंस ना मिलें, करोड़ों में हंस को देख ।

Date

ज्ञानी वचन

साखी :- घर अपने जाओ काल अब, शब्द राखो निज पास ॥
जो फिर शीश उठाय तो, करूँ तुम्हारा नाश ।

चौ०

जो जीव तुम फिर सताये । बाँध पताल तुम्हें पठायें ।

निरंजन वचन

जब तुम रूप दिखाये हमको । तब हम पुरुष जाने तुमको ।
पहले तुमको जान ना पाया । बन्धु जान अभिमान दिखाया ।

ज्ञानी वचन

धर्मदास हम तबसे आये । रैदास को गढ़ अपना बनाये ।
प्रथम युग सतयुग आया । हरिश्चन्द्र हुये वहाँ के राजा ।

धर्मदास हम तबसे आये । रैदास को गढ़ अपना बनाये ।
प्रथम युग सतयुग आया । हरिश्चन्द्र हुये वहाँ के राजा ।
सत्य शब्द हम वहाँ सुनाये । जो जाना उसे लोक पठाये ।
सत्ययुग में सत नाम धराया । देही धर में मनुष्य कहाया ।

धर्मदास से वचन

धर्मदास तब शीश झुकाया । प्रताप आपका सब मैंने पाया ।
काल चरित्र सब हमने जाना । पुरुष लीला को मैं पहचाना ।
तीन अवतार प्रथ्वी आये । इस काज तुम सभी बनाये ।

निरंजन बोध समाप्त